क्यों नशेयां दे विच पै गयो वे

इह धरती गुरूआं पीरां दी, ऋषियां- मुनीयां फकीरां दी।
गुरूबाणी पढ़दा सुनदा सै, क्यों मंदे कमी पै गयो वे- चट्ट.....

ला टीके जान गंवाई जानै, क्यों मौत नूं गले लगाई जानै।
क्यों वसदे घर उजाड़ रहयो, तूं किसदी बैंहणी बैंह गयो वे- चट्ट.....

इह जीवन रब्बी अमानत वे, करी जावें क्यों तूं खियानत वे,
क्यों देश समाज कानूंन तों, बेखौफ तूं हुदा जा रहयो वे- चट्ट.....

मां बाप दी वे जिंदजान है तू, घर- बार पिंड दी शान है तूं,
क्यों चढ़दी जवानी ते आरा, पतझड़ दा तूं चला रहयों वे-चट्ट.....

जा धरतीपुतर किसान तूं बन, जा फौजी वीर जवान तू बन,
खा दुध दहीं मखन घियो वीरा, क्यों मिठा मौहरा खा रहयो वे-चट्ट.....

असीं सब तेरे हमदर्दी वे, तैनू मुड़ मुड़ कर दे अर्जी वे
जा नशा छोड़ाउ केन्द्र विच, क्यों घरे लुक के बैह गयो वे-चट्ट.....

औधे बिल्कुल मुफत इलाज होवे, औथे जिंदगी मुड़ आबाद होवे,
तूं नशा मुक्त हो जावेंगा, गल "मधुप" पते दी कह रिहा वे- चट्ट....।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33232/title/kyon-nasheyan-de-vich-pai-gyo-ve

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |